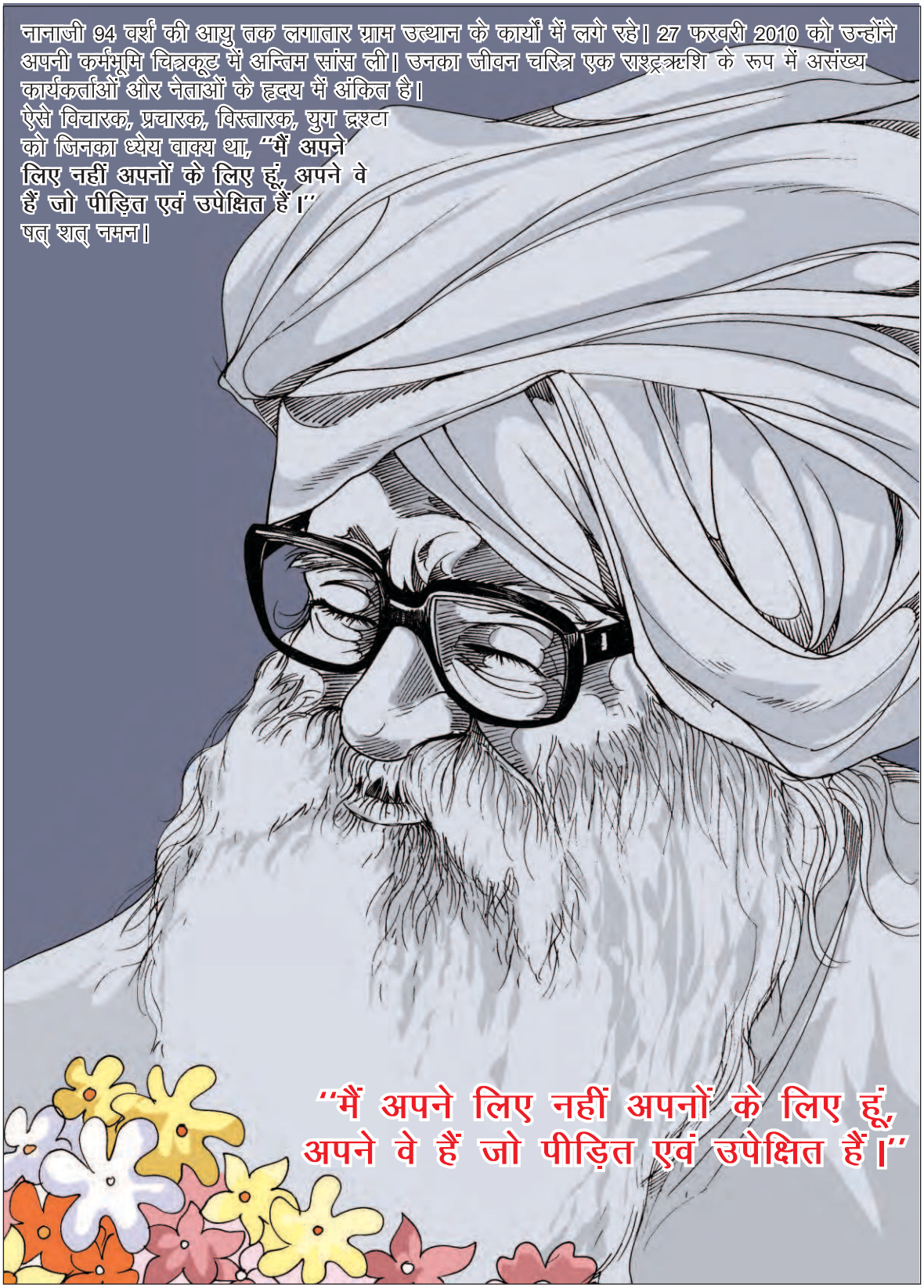
नानाजी 94 वर्ष की आयु तक लगातार ग्राम उत्थान के कार्यों में लगे रहे। 27 फरवरी 2010 को उन्होंने अपनी कर्मभूमि चित्रकूट में अन्तिम सांस ली। उनका जीवन चरित्र एक राष्ट्रऋषि के रूप में असंख्य कार्यकर्ताओं और नेताओं के हृदय में अंकित है।
ऐसे विचारक, प्रचारक, विस्तारक, युग द्रष्टा को जिनका ध्येय वाक्य था, "मैं अपने लिए नहीं अपनों के लिए हूं, अपने वे हैं जो पीड़ित एवं उपेक्षित हैं।"
षत् शत् नमन।
"मैं अपने लिए नहीं अपनों के लिए हूं, अपने वे हैं जो पीड़ित एवं उपेक्षित हैं।"